Review Of Research
Vol.1,Issue.IV/Jan; 12pp.1-2 डॉ. अर्चना शिवाजीराव कांबळे ISSN:- 2249-894X

Research Papers

मीराबाई के काव्य में कृष्णभक्ति

डॉ. अर्चना शिवाजीराव कांबळे
हिंदी विभाग , श्री शिवाजी महाविद्यालय,बार्शी.
जि.सोलापूर।

प्रस्तावना :

भक्तिकाल का साहित्य अपने पूर्ववर्ती तथा परवर्ती कालों के साहित्य से निश्चित रूप से उत्तम है। हिंदी साहित्य का आदिकाल और रीतिकाल दो इसकी प्रतिद्वांद्विता में बिलकूल नहीं ठहर सकते। हॉ, आधुनिक काल का साहित्य अपनी व्यापकता और विविधता की दृष्टि से कुछ अंशो में भक्ति काल से आगे निकल जाता है, परंतू अनुभूति की गहनता और भावप्रवणता के क्षेत्र में वह हिंदी के भक्ति साहित्य की समकक्षता में नहीं आ सकता है। आद्विवेदी जी के शब्दों में, "समूचे भारतीय इतिहास में अपने ढंग का अकेला साहित्य है। इसी का नाम भक्ति साहित्य है। यह एक नई दुनियॉ है।" भक्तिकाव्य जहॉ उच्चतम धर्म की व्याख्या करता है, वहॉ उसमें उच्च कोटी के काव्य के भी दर्शन होते है। इसकी आत्मा भक्ति है, उसका जीवन स्त्रोत रस है। उसका शरीर मानवी है। यह साहित्य एक साथ ह्रदय, मन और आत्मा की भूख को तृप्त करता है। यह काव्य एक साथ लोक तथा परलोक का स्पर्श करता है। यह साहित्य परमशक्ति का साहित्य है। इसमें आडंबरविहिन एक शूचितापूर्ण सरल जीवन झॉकी है।

डॉ.श्यामसुंदर दास जी के श्ब्दों में,"जीस युग में कबीर,जायसी,तुलसी,सूर जैसे रस सिद्द कवियों और महात्माओं की दिव्य वाणी उनके अन्तकरणों से निकलकर देश के कोने–कोने में फैली थी, उसे साहित्य के इतिहास में सामान्यतः भक्तियुग कहते है। निश्चित वह हिंदी–साहित्य का स्वर्ण युग था।" यह साहित्य एकदम अनुपम और विलक्षण है।

भक्तिकाव्य का अनुभूति पक्ष और अभिव्यक्ति पक्ष संतुलित,सशक्त और परस्पर पोषक है। कविता से तुलसी जी की शोभा और महिमा संपन्न हुयी है। सूरदास जी का काव्य भक्ति,कविता और संगित की सुंदर त्रिवेणी है। कबीर,जायसी,मीराबाई,रसखान,नंददास और नानक की कलाकृतियों पर हिंदी साहित्य–विश्व–साहित्य के सम्मुख गर्व कर सकता है। इस प्रकार भक्ति–काव्य शाश्वत काव्य है। भक्तिकाल में कृष्ण भक्त कवियों कि विशाल परंपरा हिंदी साहित्य में उदित हुई। सूरदास,नंददास,परमानंददास,मीराबाई ने अपनी अद्भूत प्रतिभा के द्वारा जो काव्य सर्जना की वह अप्रतिम है।

मीराबाई भारत के प्रधान भक्तों में तो है ही साथ–साथ हिंदी काव्य में एक उच्च स्थान की अधिकारीणी है।

जीवनवृत्तः–

मीराबाई का जन्म राठौरों की मेड़तिया शाखा के अंतर्गत राव दूदा जी के चतुर्थ पुत्र रत्नसिंह के घर में कुड़की गॉव में संवद 1955 के आसपास हुआ। शैशव में माता का देहांत हो जाने के कारण इनका पालन–पोषण पितामह दादू के द्वारा हुआ जो कि परम वैष्णव भक्त थे। इन्हीं के संसर्ग से मीराबाई के ह्रदय में कृष्ण–भक्ति के संस्कार पड़े जो कि बाद में माधुर्य–भाव की में विकसित हुए। बारह वर्षो के अवस्था में इनका विवाह चित्तौंड के महाराणा सांगा के बड़े पुत्र भोजराज से हुआ, परंतु कुछ वर्षो के बाद पति के देहांत हो जाने के कारण कृष्ण अनन्य अनुरागिणी हो गयी। वह बालकाव्य से

ही गिरधर गोपाल को अपना पति समझती थी। वह साधु–संगति,भजन एवं कीर्तन में मग्न रहने लगी। इनके लिए उन्होंने राजमर्यादा,लोग–लाज को छोड़ा। मीराबाई की मृत्यु संवद 1603 में द्वारिका में हुयी।

रचनाएँ:–

मीराबाई की रचनाएँ निम्न लिखित हैं।

1. नरसी जी का माहरो।
2. गीत–गोविंद की टीका।
3. मीरानी गरबी।
4. मीरा के पद।
5. राग सोरठ के पद।
6. रास गोविंद। आदि।

नरसी जी का माहरों में नरसी मेहता के भाव भरने की कथा उल्लेख है ।
गीत–गोविंद की टीका अभी तक अप्राप्य है।
रास गोविंद के संबंध में अनुमान है कि इन्होंने रचा होगा।
राग सोरठ के पदों में मीरा,कबीर और नामदेव के पदों का संग्रह है।,

मीरानी गरबी के गीत रास मंडली के गीतों के समान गाये जाते हैं।

मीराबाई के फूटकर पद कोई 200 के करीब मिले हैं। मीराबाई के पद गुजराती,राजस्थानी,पंजाबी खड़ीबोली आदि भाषा में मिलते हैं। ऐसा प्रतित होता है कि "दास मीरा लाल गिरधर" अथवा "मीरा के प्रभु गिरधर नागर" नाम से अनेक पद बाद में जोड़े जाते रहे हैं। मीराबाई के अन्य ग्रंथ तो मिलते ही नहीं और जो मिलते भी है वे अपूर्ण है। मीराबाई साहित्य के महत्व के अंकन के लिए इनके उपलब्ध पदों पर निर्भर रहना पड़ता है।

काव्य सौष्टव:–

मीराबाई भारत के प्रमुख भक्तो में अग्रणी स्थान पर है। उनका काव्य ऑसूओं के जल से सिक्त, पल्लवित एवं पुष्पित प्रेम–बेल मनोहारिणी सुगंध से सुवासित है। मीराबाई की भक्ति माधुर्य–भाव की है और सचमुच वह इस क्षेत्र में तुलसीदास से बढ़ जाती है। मीराबाई स्वयम् राधा बन गए है। उन्होंने प्रेम के अत्यंत सजीव एवम् अनुभूतिमय चित्र उतारे है। उनमें मिलन,उत्सुकता,आशा और प्रतिक्षा से संबंध पद सभी अनुपम है। मीरा के पदों में रहस्यात्मकता है। मीराबाई का गीति काव्य का एक आदर्श प्रस्तुत करता है। शब्द,चयन,अलंकार विधान,चुभति उक्तियॉ सूरदास जी में अधिक है, परंतू हृदय की जो गहराई मीराबाई के काव्य में है, वह सूरदास के काव्य में उपलब्ध नहीं होता। मीराबाई का दर्द दीवाणापण उनके काव्य को निराला बन जाता है। मीराबाई के कुछ पद तो राजस्थानी मिश्रित भाषा में और कुछ विशुध्द साहित्यिक ब्रजभाषा में है। मीराबाई के काव्य में सूरदास जी क्रीडा,तुलसीदास की दृढ़ता और कबीर की रहस्यात्मकता के साथ–साथ प्रेम का ऐसा उन्माद था, जो आज भी पाठक के हृदय को पिघला कर नेत्रों के द्वारा अपना महान प्रभाव प्रत्यक्ष कराता है।

संदर्भ:–

1. हिंदी साहित्य का इतिहास–विजयेंद्र स्नातक
2. हिंदी साहित्य–युग और प्रवृत्तियॉ–डॉ.शिवकुमार शर्मा